Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga

Economics

D. H. Hons Lecture No - 24

अवमूल्यन व रुपये की परिवर्तनीयता

Devaluation and convertibility of Rupee.

जब कोई देश अपनी मुद्रा के बदले दुसरे देश की मुद्राएँ पहले से कम मुल्य में लेने के लिए तैयार हो जाता है तो उसको मुद्रा का अवमूल्यन कहते हैं। दुसरे शब्दों में देश की मुद्रा का विदेशी मुद्राओं में मूल्य कम कर देने को अवमूल्यन कहा जाता है। जब कोई देश अपने आपनी मौद्रिक व्यवस्था के समय दुसरे देशों या विदेशी मुद्रा का मूल्य कम कर देने के लिए तैयार हो जाता है तो उसे उस देश का मुद्रा का अवमूल्यन कहते हैं। उदाहरण के लिए मान लिजीए भारत का 100 रूपया 50 डालर के बराबर है यदि किसी कारणवश भारत सरकार 100 रूपये की विनिमय दर 40 डालर निर्धारित कर दे तो हम इसे रूपये का डालर में अवमूल्यन कहेंगे। रूपये के अवमूल्यन की परिभाषा कुछ अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गयी है जो इस प्रकार है।

1. डॉ॰ गांगुली के अनुसार "अवमूल्यन का अभिप्राय देश की मुद्रा के वाह्य मूल्यों में कमी कर देना है।"

2. पॉल एन्जिग के अनुसार "देश की मुद्रा अन्य देशों की मुद्राओं के मूल्य के साथ निर्धारित सरकारी क्षमता Official Parities में में कमी करना अवमूल्यन है।"

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जब कोई देश अपनी मुद्रा के बदले दुसरे देश की मुद्राएँ पहले से कम मूल्य में लेने के लिए तैयार हो जाता है उसे हम मुद्रा का अवमूल्यन कहते हैं।

अवमूल्यन और मुद्रा ह्रास में संबंध

मूल्य ह्रास में देश की मुद्रा की आंतरिक कीमत में कमी की जाती है तथा अवमूल्यन में मुद्रा के बाह्य मूल्य को कम किया जाता है। जब मुद्रा की आंतरिक कीमत को कम कर दिया जाता है तो कुछ समय उपरान्त उसकी बाह्य कीमत भी कम हो जाती है। किन्तु यह बात ध्यान देने योग्य है कि मूल्यह्रास का उद्देश्य मुद्रा का बाह्य मूल्य कम करना नहीं होता है।

Scanned by CamScanner

मुद्रा अवमूल्यन और विनिमय अवमूल्यन

मुद्रा अवमूल्यन और विनिमय अवमूल्यन में प्रमुख अंतर यह है कि जब सरकार देश की मुद्रा को बाह्य मूल्य में स्वयं कम करती है तो उसे अवमूल्यन कहा जाता है। परन्तु यदि मुद्रा के बाह्य मूल्य में बाहर की शक्तियों की क्रियाशीलता से स्वतः कमी हो जाती है तो उसे विनिमय अवमूल्यन कहते हैं। इस प्रकार विनिमय अवमूल्यन स्वयं सक्रिय होता है। अतः मुद्रा अवमूल्यन और विनिमय अवमूल्यन में यह अन्तर होते हुए भी दोनों का अर्थव्यवस्था में लगभग समान प्रभाव पड़ता है।

मुद्रा के अवमूल्यन का उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. प्रतिकूल भुगतान संतुलन को सुधारना — मुद्रा के अवमूल्यन के परिणाम स्वरूप देशी वस्तुएँ विदेशों में सस्ती हो जाती हैं अवमूल्यन से देश की मुद्रा सस्ती हो जाने से विदेशी पहले से कम मुद्रा देकर अधिक माल खरीद सकते हैं। जिससे निर्यात प्रोत्साहित होते हैं और स्वदेश में आयातित माल महँगा हो जाने से आयात निरुत्साहित होते हैं परिणाम स्वरूप देश का का भुगतान असंतुलन दूर हो जाता है। मुद्रा अवमूल्यन के परिणाम स्वरूप देश के निर्यात में वृद्धि और आयात में कमी हो जाती है इसे एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया जाय भारत, अमेरिका के साथ विनिमय दर रुपया 1 = 10 सेन्ट से घटाकर विनिमय दर रुपये 1 = 8 सेन्ट कर देता है इससे भारतीय निर्यात अमेरिका में सस्ते हो जाएंगे। क्योंकि अब अमेरिका आयात कर्ता 8 सेन्ट व्यय करके भारत से उतना ही माल खरीद सकता है जितना पहले वह 10 सेन्ट में खरीद सकता था इसके विपरीत अमेरिकी आयात भारत के लिए महंगे हो जाएँगे। क्योंकि पहले तो भारतीय आयातकर्ता 1 रु० व्यय कर के 10 सेन्ट का माल अमेरिका से खरीद सकता था। अब वह 1 रुपया के 8 सेन्ट ही माल खरीद सकता है इस प्रकार अवमूल्यन के परिणाम स्वरूप निर्यात प्रोत्साहित होते हैं और स्वदेश में आयातित माल महंगा हो जाने से आयात निरुत्साहित हो जाते हैं फलतः देश का देश का भुगतान असंतुलन दूर हो जाता है।

2. आंतरिक मूल्य स्तर को ऊँचा करना — आंतरिक मूल्य स्तर को ऊंचा उठाने के लिए भी अवमूल्यन किया जाता है,

Scanned by CamScanner

जब देश में मूल्य स्तर गिरा हुआ रहता है तो अवमूल्यन के परिणाम स्वरूप देशी वस्तुएँ विदेशियों के लिए सस्ती हो जाती हैं जिससे वे अधिक वस्तुएँ माँगने लगते हैं विदेशों में देशी वस्तुओं की माँग बढ़ने से देश में आंतरिक मूल्य स्तर ऊँचा उठने लगता है।

3. अवमूल्यन की स्थिति में सुधार करना — यदि किसी देश की मुद्रा का बाह्य मूल्य पहले से ही अधिक हो तो वह इस त्रुटि को सुधारने के लिए भी अवमूल्यन कर सकता है।

4. देशी उद्योग धन्धों का संरक्षण — यदि किसी देश में वस्तुओं के कीमतों में गिरावट आ जाती है तो उस देश से अधिक माल के समान हमारे देश में आने लगता है इससे स्वदेशी उद्योग धन्धे खतरे में पड़ जाते हैं। इससे रोकने के लिए अपने देश की मुद्रा का अवमूल्यन करना आवश्यक हो जाता है।

5. विनिमय दरों का समायोजन — कभी-कभी कोई देश महत्वपूर्ण देशों की मुद्रा इकाइयों की क्रय शक्ति के परिवर्तन के अनुसार विनिमय दर को समायोजित करने के उद्देश्य से अपनी मुद्रा इकाई की क्रय शक्ति को भी परिवर्तित कर सकता है।

6. निर्यात (व्यापार) की सुरक्षा — यदि दूसरे देशों ने (जिनमें विदेशी व्यापार विशेष रूप से होता है) अपनी मुद्रा इकाइयों का अवमूल्यन कर दिया है और किसी देश विशेष ने अपनी मुद्रा का अवमूल्यन नहीं किया है तो इससे उस देश विशेष के निर्यात व्यापार को ठेस पहुँचेगी और परिणामस्वरूप भुगतान संतुलन में प्रतिकूलता की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाएगी। अतः इस समस्या का समाधान उस देश विशेष के लिए केवल अवमूल्यन द्वारा ही संभव हो।

इस प्रकार उपर्युक्त अवमूल्यन के उद्देश्यों द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विश्व के विभिन्न देश आयात-निर्यात प्रोत्साहन हेतु समय-समय पर अपनी मुद्रा इकाइयों में अवमूल्यन करते रहते हैं जिससे व्यापार संतुलन और भुगतान संतुलन संतुलित रहता है।

Scanned by CamScanner